

**आजा-भंग** पुं. (तत्.) आज्ञा अथवा आदेश का उल्लंघन करना, अधिकारी के अनुदेश का पालन न करना।

**आजायी** पुं. [आ+जायी] (तत्.) 1. जानने-समझने वाला 2. अनुभव करने वाला।

**आजार्थक** वि. (तत्.) व्या. क्रिया का वह रूप जिसमें किसी काम को करने की आज्ञा का बोध होता है। जैसे- 'कर' करो, कीजिए।

**आजार्थकवाक्य** पुं. (तत्.) जिस वाक्य से आज्ञा, उपदेश अथवा विनती प्रदर्शित हो।

**आजार्थक वृत्ति** स्त्री. (तद्.) क्रिया का वह रूप जिसमें किसी को कुछ करने के लिए कहा जाए, विधि-रूप।

**आज्य** पुं. (तत्.) 1. घी 2. घी की जगह काम में आने वाला पदार्थ (जैसे-तेल, दूध) 3. वह घी जिसे यज्ञ की आहुति में डाला जाए।

**आटना** अ.क्रि. (तत्.) 1. (पूरा-पूरा) ढक देना 2. भर देना 3. दबाना।

**आटविक** पुं. (तत्.) 1. अटवी अर्थात् वन का निवासी, वनवासी 2. पथ प्रदर्शक 2. सेना का एक प्रभाग।

**आटा** पुं. (देश.) 1. पिसा हुआ अन्न 2. पिसा हुआ गेहूँ आदि अनाज मुहा. आटे-दाल का भाव मालूम होना- कठोर वास्तविकता का पता चलना; आटे के साथ घुन पिसना- दोषी के साथ निर्दोष का भी सजा भुगतना; आटे-दाल की चिंता होना- गृहस्थी की फिक्र होना; आटे में नमक- थोड़ा सा, जरा सा।

**आटीकर** पुं. (तत्.) साँड, वृषभ।

**आटोयाफ** पुं. (अं.) 1. किसी दूसरे के लिए, अपने हाथ से लिखे हुए कुछ वाक्य या वाक्यांश 2. हस्ताक्षर, दस्तखत।

**आटोप** पुं. (तत्.) 1. फूलना, फुलाव 2. आडंबर 3. आधिक्य, प्रचुरता 4. घमंड, हेकड़ी 5. सूजन 6. पेट की नसों का तनाव 7. पेट में गुड़गुड़ाहट।

**आठ** वि. (तद्.) सात और एक (की संख्या), चार का दूना मुहा. आठ-अठारह होना-तितर-बितर होना; आठ-आठ आँसू रोना- बहुत अधिक विलाप करना; आठों पहर- हर समय, हर पल; आठ पहर चौंसठ घड़ी- हर समय।

**आठक** वि. (तद्.) 1. आठ के स्थान पर 2. किसी वस्तु के अनेक अंशों में से आठ की गणना पर स्थित अंश 3. लगभग आठ।

**आठ-झूठ** पुं. (देश.) शास्त्रों में वर्णित आठ प्रकार के झूठे वचन जिन्हें विशेष रूप में अनुमति प्राप्त है- हास विनोद में, खुशामद में, शिष्टाचार में, अपनी पत्नी से भेद छुपाने के लिए, विवाद में, धन की रक्षा में, गो और ब्राह्मण की रक्षा में।

**आठ दिशाएँ** पुं. (देश.) भू. भौगोलिक दिशा-निर्देश में वर्णित आठ दिशाएँ-पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, वायव्य (उत्तर-पश्चिम), ईशान (उत्तर-पूर्व), नैऋत्य (दक्षिण-पश्चिम), तथा आग्नेय (दक्षिण-पूर्व)।

**आठें** स्त्री. (तद्.) अष्टमी तिथि।

**आठों पहर** अव्य. (तद्.) हर समय, सदा, हमेशा।

**आठों** स्त्री. (तद्.) दे. आठें।

**आडंबर** पुं. (तत्.) 1. ठाठ-बाट, दिखावा, तडक-भडक, ऊपरी टीम-टाम, ढोंग 2. घमंड, अभिमान 3. प्रचंडता, रोष, आवेश 4. कोलाहल, बादलों की गरज, हाथी की चिंघाड़।

**आडंबरपूर्ण** वि. (तत्.) दिखावटी, अस्वाभाविक, शिष्टाचार रहित, अनैतिक।

**आडंबरहीन** वि. (तत्.) जो दिखावटी न हो, स्वाभाविक, शिष्ट।

**आडंबरी** वि. (तत्.) 1. आडंबर करने वाला 2. घमंडी, अभिमानी 3. अत्यलंकृत, शब्दाडंबर-पूर्ण।

**आडंबरोक्ति** स्त्री. (तत्.) आडंबरात्मक शब्दों से भरा वाक्य, वाग्जाल से युक्त कथन, भारी-भरकम शब्दों से भरी भाषा।